International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.712 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 8, Issue 5, September 2021 |

भारत के समक्ष चुनौतियाँ : चिंतन एवं समाधान (आतंकवाद एवं नक्सलवाद के विशेष संदर्भ में)

आशा नागर

सहायक आचार्य (राजनीति विज्ञान)

राजकीय महाविद्यालय देवली (टोंक)

वर्तमान समय में भारत देश विकासशील देशों की श्रेणी से निकलकर विकसित देशों में शामिल होने के लिए अग्रसर हो रहा है। यद्यपि कुछ वर्षों पहले भारत को विभिन्न धर्मों का संगम तथा चमत्कारों का देश माना जाता था। आज वही भारत देश वैज्ञानिकों, युवाओं तथा चौमुखी विकास का पर्याय बन गया है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि भारत दिन - दूनी, रात- चौगुनी प्रकृति कर रहा है । भारत में जहां शिक्षा, रक्षा, चिकित्सा, साहित्य तथा आर्थिक क्षेत्र में नित्य नए आयाम स्थापित कर रहा है, वहीं भारत में कुछ समस्याएं जैसे भाषावाद जातिवाद, सांप्रदायिकतावाद, जनसंख्या, बेरोजगारी, भुखमरी, काला धन जैसी समस्याएं निरंतर बढ़ती जा रही है। दूसरी ओर आतंकवाद, नक्सलवाद, सांस्कृतिक आक्रमण आदि समस्याएं भी सिर दर्द बनी हुई है जो प्रतिदिन नित नए मुखोटों के रूप में सामने आ रही है। वैसे समस्याओं पर विचार करें तो इनमें से सभी समस्याएं बहुत गंभीर हैं और किसी भी राष्ट्र की प्रगति में बाधक ही सिद्ध होगी। लेकिन संदर्भानुसार मेरे आलेख में भारत के समक्ष आतंकवाद एवं नक्सलवाद जैसी चुनौतियों के संदर्भ में चिंतन किया गया है।

मुख्य शब्द -आतंकवाद, समस्याएं, विकास, मानव विरोधी ताकत, हिंसात्मक गतिविधियां, नक्सलवाद, चुनौतियां।

- **आतंकवाद**

20वीं सदी तक मानव ने लगभग प्रत्येक क्षेत्र शिक्षा, विज्ञान, संचार, तकनीकी, चिकित्सा आदि के क्षेत्र में उपलब्धियां के उच्च मुकाम हासिल कर लिए हैं एवं प्राकृतिक आपदाओं पर भी काफी कुछ सफलता प्राप्त कर ली है, परंतु 21वीं सदी के प्रारंभ से ही मानव की खुशियों को लीलने वाला दैत्य ' आतंकवाद' सबसे भयानक रौद्र रूप में सामने आ रहा है। फलत: आतंकवाद अब राष्ट्रीय समस्या तक सीमित न रहकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चिंता एवं चिंतन का विषय बन गया है। देखा जाए तो इस समस्या से भारत ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व किसी न किसी रूप में त्रस्त एवं भयभीत है, जिसका अनुमान आसानी से इस प्रकार लगाया जा सकता है कि चाहे कोई भी सभा, सम्मेलन हो या उच्च स्तरीय वार्ताएं हो, बिना आतंकवाद और नक्सलवाद पर चर्चा किए बिना उनका समापन नहीं होता। अमेरिका के वर्ल्ड ट्रेड सेंटर तथा पेंटागन पर हुए आतंकी हमले ने यह साबित कर दिया है कि चाहे राष्ट्र छोटा हो या बड़ा या विश्व शक्ति इस दैत्य के प्रकोप से बच नहीं सका है

जैसा कि पूर्व में कहा जा चुका है कि वर्तमान समय में आतंकवाद जैसी समस्या भारत के लिए भी सरदर्द बनी हुई है। आतंकवाद पर चर्चा करने से पहले यह जानना आवश्यक हो जाता है कि आतंकवाद क्या है?आतंकवाद कोई दार्शनिक सिद्धांत नहीं बल्कि यह एक साधन है जिसके मूल में किसी सामाजिक या राजनीतिक परिवर्तन की आकांक्षा निहित रहती है। यह एक हिंसक नीति है जिसका प्रयोग कोई भी राज्य, राजनीतिक संगठन, स्वतंत्रतावादी समूह, अलगाववादी संगठन, जातीय या धार्मिक उन्मादी अपने उद्देश्य एवं दहशत का माहौल पैदा कर प्राप्त करना चाहते हैं। अमेरिकी विद्वान चेस्टर एवं फ्लावर क्रारल्स के अनुसार ' टेरर ' शब्द लेटिन भाषा के 'टेरेरे ' शब्दों से उत्पन्न हुआ है जिसका आशय है भयभीत होना या आतंकित करना। इस अर्थ में आतंकवाद सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए की गई नियमित हिंसा है। इसी तरह आतंकवाद को परिभाषित करते हुए 1978 में योरूसलम द्वारा आयोजित एक अंतरराष्ट्रीय सेमिनार में कहा गया कि "राजनीतिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए भय पैदा करने हेतु जानबूझकर क्रमबद्ध रूप से निर्दोषों को धमकी देना, उनके अंग भंग कर देना या उनकी हत्या कर देना ही आतंकवाद कहलाता है।"

अतः आतंकवाद के बारे में यह कहा जा सकता है कि यह कोई विचारधारा या सिद्धांत नहीं है अपितु कुछ मानव विरोधी ताकतों का एक उपकरण मात्र है। इसका प्रयोग कर कोई भी राज्य या राजनीतिक संगठन, अलगाववादी संगठन, जातीय, धार्मिक उन्मादी अपने उद्देश्य को प्राप्त करना चाहते हैं। भारत सदैव ही अपने पड़ोसी देशों के साथ शांति एवं सौहार्दपूर्ण संबंध बनाए रखना चाहता है। यही कारण है कि भारत पाकिस्तान को अनेक बार सीमा के पार आतंकवाद को समाप्त करने के लिए आगाह कर चुका है। पाकिस्तान

मौखिक रूप से तो आतंकवाद को समाप्त करने के बाद स्वीकार कर लेता है लेकिन वापस अपनी काली करतूत से बाज नहीं आता है। अपने व्यवहार से इस्लामी जिहाद के नाम पर निरंतर सीमा पर एवं घरेलू स्तर पर आतंकवाद को अंजाम देता रहता है।

हालांकि 11 सितंबर 2011 की घटना ने यह सिद्ध कर दिया है कि आतंकवाद कहीं भी अपनी पकड़ बना सकता है। इस घटना ने विश्व की महाशक्ति के रूप में मान्य देश अमेरिका के इस भ्रम को भी तोड़ दिया है कि उनके पास एक मजबूत एवं विकसित सुरक्षा कवच है। अब कोई भी देश आतंकवाद की पहुंच से दूर नहीं है। भारत तो जैसे आतंकवाद की प्रयोगशाला ही बन गया है। भारत में अब तक हुए आतंकी घटनाओं का विस्तृत रूप में वर्णन करना यहां संभव नहीं है, लेकिन ऐसे कुछ मुख्य मुख्य आतंकी हमलों का यहां उल्लेख किया गया है,जिनका प्रभाव भारतीय जनता, प्रशासन एवं देश पर भयानक रूप से पड़ा है।

- भारतीय संसद पर हमला 2001
- अक्षरधाम मंदिर पर हमला 24 सितंबर 2002
- रामपुर सीआरपीएफ कैंप पर हमला 2008 *दिल्ली, अहमदाबाद, बेंगलुरु सीरियल बम धमाके 2008
- मुबई हमला 2008
- वाराणसी में बम विस्फोट 2010
- पंजाब के गुरदासपुर में आतंकी हमला 26 जुलाई 2015 ।
- असम जो अपने नृत्यों के लिए प्रसिद्ध था आज वहां मौत का तांडव होता है।
- दक्षिण भारत में जहां कभी मंदिरों में आरती और घंटियों की स्वर लहरी उठती थी आज बम के धमाके सुनाई पड़ते हैं। इतना ही नहीं आतंकवादियों के मंसूब है यहां तक की सीमित नहीं रहे अपितु कश्मीर जिस धरती का स्वर्ग कहते हैं आतंकवादी गतिविधियों के चलते नरक बन चुका है।
- जम्मू कश्मीर में पठानकोट, बारामुला के उरी सैनिक कैंप हमला, नगर कोटा,सुजवान सैनिक कैंप पर हमला, 14 फरवरी 2019 को अवंतीपुरा की पुलवामा में सीआरपीएफ के काफिले पर आत्मघाती हमला आदि लगभग सभी घटनाओं को जब भी याद किया जाता है तो आंखों के सामने वही खूनी मंजर, क्षत विक्षत शवों के टुकड़े,जनधन की हानि के दृश्य, चीत्कार करते लोग ही दिखाई देने लग जाते हैं और हर बार मानवता का यह घोर दुश्मन आतंकवाद चुनौती के रूप में भारत के सामने खड़ा दिखाई देने लग जाता है। इस प्रकार आज भारत आतंकवादी समस्या से जकड़ चुका है। अतः आवश्यकता इस अवस्था से निजात कैसे पाया जाए इस पर चिंतन करके तथा यथाशीघ्र समाधान पाने की है। इस संबंध में प्रो. भारत कर्नल ने पंजाब के गुरदासपुर में हुए आतंकी हमले के समाधान के संबंध में कहा कि "आतंकी हमले का मौका जो भी हो बड़ा सवाल यह है कि हम उससे कैसे की निपटते हैं? हमारी केंद्र सरकार और राज्य सरकारों की प्राथमिकताएं क्या है? हम अपनी प्राथमिकताओं में स्पष्ट है या नहीं ? हम कड़े कदम उठाने में कितने सक्षम हैं? जब तक इन सवालों के दृढ़ एवं सकारात्मक जवाब हमें नहीं मिल जाते तब तक भारत को आतंकी हमले से नहीं बचाया जा सकता।" फिर भी कुछ व्यावहारिक उपाय हैं जिन्हें कुछ हद तक अपना कर सफलता नहीं तो सफलता की ओर बढ़ ही सकते हैं-

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रत्यर्पण संधि लागू की जाए, बेरोजगारी को काम किया जाए, शिक्षा में नैतिक शिक्षा को सम्मिलित किया जाए, मीडिया द्वारा आतंकवादियों के महिमा मंडल की प्रवृत्ति से बचा जाए, पुलिस बल को मजबूत बनाकर उसका आधुनिकरण किया जाए, पोटा जैसे कठोर कानून बनाए जाए। भारत में आतंकवाद को खत्म करने में सरकार कोई भी कसर नहीं छोड़ती है। कई प्रकार की सरकारी कानून भी इसे खत्म करने के लिए अस्तित्व में आ चुके हैं। परंतु अब हमें विचारों की गति से भी अधिक गति से आतंकवादी एवं उनकी हिंसात्मक गतिविधियों को खत्म करने के लिए कार्य करना होगा।

❖ नक्सलवाद

जिस तरह से आतंकवाद भारत के लिए पेचीदी समस्या के रूप चेतावनी देता रहता है उसी प्रकार नक्सलवाद भी आंतरिक सुरक्षा को हानि पहुंचाने वाली एक मुख्य समस्या है। नक्सलवाद का जन्म 60 के दशक में पश्चिम के नक्सलवादी आंदोलन की कोख से हुआ है। नक्सलवाद ' नक्सलवादी' नामक शब्द से बना है जो कि पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग जिले की सिलीगुड़ी अनुमंडल में स्थित एक स्थान का नाम है। यद्यपि नक्सलवाद की समस्या पहले भी रही है लेकिन आजकल इसका विस्तार अधिक हो गया है जमीदारों के विरुद्ध प्रारंभ हुआ यह नक्सलवादी आंदोलन आज सीधे सत्ता के खिलाफ हो गया है । नक्सलवादी गतिविधियों के क्षेत्र में आंध्र प्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, उत्तराखंड, केरल और कर्नाटक राज्य आ चुके हैं। गृह मंत्रालय ने अपनी एक रिपोर्ट में नक्सलवाद से प्रभावित जिलों का विवरण दिया वह इस प्रकार हैं 6- -

देश के 55 जिले नक्सलवादी हिंसा से पूरी तरह ग्रस्त हैं 17 जिले आंदोलन से प्रभावित हैं 52 जिलों में नक्सलवादियों का आंशिक असर है और 21 अन्य जिले नक्सलवादियों के निशाने पर हैं इस तरह आज यह समस्या 16 राज्यों के 180 जिलों को अपने

आगोश में ले चुकी है । नक्सलवाद क्या है ?उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि क्या है? जैसे प्रश्नों के उत्तर में न उलझकर इस आलेख में यह बताया गया है कि आज नक्सलवाद जैसी समस्या राष्ट्रीय स्तर पर पूर्णतया पैर जमा चुकी है जो भारत के लिए गंभीर चुनौती के रूप में उभरकर सामने आ रही है। समय रहते हुए इस समस्या पर नियंत्रण नहीं पाया गया तो यह अपना विस्तार त्वरित गति से करती रहेगी जो भारत के लिए शुभ संकेत नहीं कहा जा सकता है। आखिर नक्सलवाद की समस्या का निराकरण कैसे किया जाए इस संबंध में मेरा मानना है कि किसी भी समस्या के तहत में जाकर उसे समस्या के उत्पन्न कर्म का पता लगाना चाहिए तत्पश्चात उन कर्म पर चिंतन करते हुए समस्या का समाधान ढूंढना चाहिए। जैसा कि हम सब जानते हैं की साम्यवादी विचारधारा नक्सलवाद का प्रमुख आधार है। आर्थिक शोषण एवं असमानता को समाप्त करने के साध्य के लिए हिंसा को साधन बनाना साम्यवादियों की विचारधारा रही है। भारत के नक्सली संगठन भी गरीब व्यक्तियों, आदिवासियों, भूमिहीन मजदूरों का शोषण के शिकार व्यक्तियों का सहारा बनने तथा उन्हें राहत पहुंचाने का दावा करते हैं। इसलिए यह अपने मंसूबों को फलीभूत करने के लिए क्रूर हिंसा का सहारा लेते रहते हैं। अतः हमें ऐसी व्यवस्थाओं को स्थापित करना चाहिए जो समानता के भाव को मजबूती प्रदान करें ।भारत सरकार ने भी नक्सली समस्या का निपटारा करने के लिए समय-समय पर अनेक प्रयास और अभियान चलाए हैं जो इस प्रकार हैं -

ग्रे हॉन्ड्स -आंध्र प्रदेश (1989)

सलवा जुइम - छत्तीसगढ़ (2005)

कोबरा -उड़ीसा (2009)

ऑपरेशन हॉक (ग्रीन हंट) (2010)

भारत सरकार के उपर्युक्त प्रयासों और अभियानों के बावजूद भी वर्तमान समय में भी नक्सलवादी हिंसक घटनाओं को अंजाम देते रहते हैं। अतः अभी भी इस समस्या के समाधान की आवश्यकता है। नक्सलवाद जैसी समस्या पर नियंत्रण पाने के लिए समानता के साथ-साथ सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टिकोण को अपनाना जरूरी है। भारत सरकार को चाहिए कि वह भूमि सुधार कार्यक्रमों को एवं कानून को प्रभावी ढंग से लागू करें,साथ ही नक्सल प्रभावित इलाकों में विकास कार्यक्रमों को प्राथमिकता से बढ़ावा दें। इतना ही नहीं सैनिक, अर्ध सैनिक बलों की तैनाती तथा सुरक्षा नियोजित ढंग से करके ही नक्सलवादी समस्या पर नकेल कसी जा सकती है।

निष्कर्ष -

आतंकवाद एवं नक्सलवाद की चपेट में भारत सहित विश्व के कई देश इन समस्याओं की गिरफ्त में होते जा रहे हैं । अतः मानवीय हितों को सर्वोपरि रखकर तथा इन समस्याओं पर राजनीतिक रोटियां ने सेककर, दूरदृष्टि रखकर ही इन पर काबू पाया जा सकता है। इस तरह इन चुनौतियों का जितना शीघ्र समाधान करेंगे मानव जीवन को उतना ही कुशल बना सकेंगे। क्योंकि ये दोनों चुनौतियां मानव विरोधी चुनौतियां हैं। अतः समय रहते हुए इनका समाधान करना सभी राजनीतिक दलों, राज्य सरकारों एवं समस्त नागरिकों का प्रथम कर्तव्य होना चाहिए तब कहीं जाकर इन चुनौतियों पर अंकुश लगाया जा सकता है और भारत विकास की ओर अग्रसर होते हुए निरंतर प्रगति कर सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

*. डॉ राजेश कुमार,वैश्विक आतंकवाद

*. मनीष पटेल एवं यशपाल चौधरी ,नई सदी के भारत में समक्ष आंतरिक सुरक्षा की चुनौतियां

*. मैन चंद खंडेला अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद

*.नरेश, भारतीय आतंकवाद

*.विश्वेश शर्मा, आतंकवाद एवं जन साझेदारी

*.जी.एल शर्मा, सामाजिक मुद्दे ।

*. सिविल सर्विसेज एवं क्रॉनिकल मासिक *.पत्रिका, इंडिया टुडे, प्रतियोगिता दर्पण

*.दैनिक समाचार पत्र,

*.गूगल सर्च इंजन।